Paper - 3
Day 2 H

S.S. Handey

Hawtrey's Trade cycle

Hawtrey के विचार में व्यापार चक्र एक शुद्ध मौद्रिक घटना है क्योंकि सामान्य मांग स्वयं एक मौद्रिक घटना है। उनके विचार के अनुसार यद्यपि युद्ध, भूकम्प बाढ़ इत्यादि अमौद्रिक कारण कभी कभी अर्थव्यवस्था के कुछ भागों में कुछ समय के लिए मन्दी अथवा तेजी की घटनाओं को जन्म दे सकते हैं परन्तु उनके द्वारा व्यापार चक्र जैसी पंचदार घटना उत्पन्न हो सकती है। क्योंकि मुद्रा की मात्रा में समय समय पर होने वाली कमी या वृद्धि अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रियाओं के उच्चावचन का एक मात्र कारण है।

वर्तमान मुद्रा एवं साख व्यवस्था बहुत ही अस्थिर स्वभाव की है। इसका यह अस्थिर स्वभाव ही आर्थिक उतार चढ़ाव को जननी है। जब बैंक साख का विस्तार होता है तो व्यापार चक्र की ऊर्ध्वगति घटित होती है।

जब बैंक द्वारा साख की ब्याज दर में कमी लाकर विस्तार किया जाता है तो व्यापारी अपने स्टाक की मात्रा बढ़ाने पर प्रेरित होते हैं। वे अत्यधिक मात्रा में उत्पादकों को वस्तुओं का आर्डर भेजने लगते हैं। उत्पादक इन आर्डरों की पूर्ति के लिए उत्पत्ति साधनों में वृद्धि करने लगते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उत्पत्ति के साधनों की मांग में वृद्धि हो जाती है। उत्पादन के साधनों की मांग बढ़ने से इसकी पुरस्कार दर बढ़ जाती है और रोजगार में भी वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार जनता के हाथों में क्रय शक्ति बढ़ जाती है जिससे प्रभावपूर्ण मांग में भी वृद्धि हो जाती है। इन सब के कारण एक उन्मुख चक्र का आविर्भाव होता है। अर्थात (i) ब्याज की दर में कमी के कारण स्टाक के आर्डरों में वृद्धि होती है (ii) अधिक आर्डर के कारण उत्पत्ति-साधन पूरी तरह रोजगार संलग्न होने लगते हैं (iii) अधिक उत्पादन में अधिक विक्रय और अधिक आय जनित होते हैं (iv) अधिक विक्रय से आशावादिता बढ़ती है और (v) अधिक आशावादिता के कारण स्टाक के आर्डरों में और भी अधिक वृद्धि होती है। इस प्रकार चक्रों की ऊर्ध्वगति जोर पकड़ती जाती है।

(2) अधोगति व प्रतिसार — यदि ब्याज की दर में वृद्धि हो जाती है तो व्यापारी अपने स्टाक घटाने के लिए विवश हो जाते हैं। वे उत्पादकों को कम मात्रा में वस्तुओं के आदेश भेजने लगते हैं जब उत्पादकों के पास कम मात्रा में आदेश पहुंचता है तो वे कम उत्पादन करते हैं। व्यापारी अपने विक्रय को कम होता देखकर निराश हो जाते हैं और एक कुचक्र चल पड़ता है अर्थात निराशा के कारण आदेश में कमी आती है जिससे उत्पादन तथा रोजगार में कमी आती है आय गिर जाती है विक्रय की मात्रा घट जाती है। एक बार

Ajanta Oxford

अधोगति या संकुचन अवस्था प्रारम्भ हो जाती है जो सहजता से पकड़ी जाती है।

③ संकटावस्था — जब तक बैंक व्यापारियों को नीची ब्याज दर पर ऋण की सुविधाएं प्रदान करते रहते हैं तब तक अर्थव्यवस्था सुचारु रूप से कार्य करती रहती है। लेकिन बैंकों की भी ऋण देने की एक सीमा होती है। बैंकों को अपने दायित्व के अनुपात में न्यूनतम नकद कोष रखना पड़ता है इसलिए जब उन्हें यह अनुपात कायम रखने में कठिनाई का अनुभव होता है तब वे एकदम व्यापारियों को कर्ज देना बन्द कर देते हैं तथा उनसे अपने पुराने ऋणों को शीघ्र भुगतान करने को कहते हैं। बैंकों की नीति में अचानक परिवर्तन होने से व्यापारी अपना स्टॉक बेचने लगते हैं ताकि बैंकों का कर्ज चुकाया जा सके। बहुत बार ऐसा होता है कि बहुत सारी फर्मे अपने वित्तीय दायित्व को पूरा करने में समर्थ नहीं हो पाती है जिसके कारण एक के बाद एक फर्म बन्द होने लगती है और सारा संरचना ताश के पत्ते की तरह पूरी तरह से ढह जाती है। संकुचन प्रावस्था भी संचयी होती है। पुराने रुके आदेश के समाप्त होते देखकर उत्पादन कर्ता उत्पत्ति को घटाने लगते हैं जिससे उत्पत्ति के साधनों की मांग कम हो जाती है जिससे वे बेरोजगार हो जाते हैं। आय कम हो जाती है। आय के अभाव में बाजार से वस्तुओं की मांग और भी अधिक कम होती है और व्यापारियों में निराशा की भावना उत्पन्न हो जाती है जिससे उद्योगों में उत्पादन की मात्रा पहले से भी कम हो जाती है जिससे चारों तरफ अवसाद फैल जाता है।